कविता

शिक्षा

सुनील कुमार गौड़*

मुझे 'पढ़ाते' हो दिन-रात,
क्यों नहीं करते 'मेरी' बात।
मेरा मन है निर्मल-कोमल
करते नहीं मेरे 'मन' की बात

जो मैं चाहूँ वो मैं सीखूँ,
जैसे चाहूँ वैसे सीखूँ।
सिखलाओ मेरे अनुसार,
करते रहो, मेरे मन की बात।

संग में तुम बैठो मेरी मम्मी,
संग में तुम बैठो पापा।
और गुरु जी तुम भी बैठा,
बनके मेरे खेवनहार।

मेरे शौक है, मेरी जान,
खेलकूद हैं, मेरी शान।
इसमें हैं मेरा अभिमान,
इनको भी मानो तुम शान।

करता हूँ मैं, बनता हूँ मैं,
खेलकूद कर बढ़ता हूँ मैं।
रागद्वेष नहीं रखता हूँ मैं,
देख-समझकर जीता हूँ मैं।

मुझे बनाओ, मुझे 'सँवारो',
शिक्षा है, मेरा उद्धार।
कर दो तुम मेरा उद्धार,
इसमें है, सबका उद्धार।।

* *शिक्षक-प्रशिक्षक*, पाठ्यचर्या विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उत्तराखंड, तपोवन रोड, देहरादून – 248008